

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

(जन्म : सन् 1926 ई., निधन : सन् 1983 ई.)

नई कविता के इस प्रमुख कवि का जन्म बस्ती (उ.प्र.) में हुआ। आर्थिक अभावों से जूझते हुए इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में एम.ए. किया। स्कूल में शिक्षक, क्लर्क की और आकाशवाणी में नौकरी की। बाद में 'दिनमान' के उपसम्पादक रहे।

इनकी कविताओं में आधुनिक जीवन की विडंबना, विषम स्थिति में भी व्यक्ति की जिजीविषा आदि का मार्मिक चित्रण मिलता है। 'जंगल का दर्द', 'कुआनो नदी', 'गर्म हवाएँ', 'खूटियों पर टँगे लोग', 'क्या कह कर पुकारूँ', 'कोई मेरे साथ चले' आदि इनके प्रमुख काव्य-संग्रह हैं। इनकी रचनाएँ 'तीसरा सप्तक' में भी संकलित हैं। 'बतूता का जूता' बाल कविताओं का अनूठा संग्रह है। इन्होंने नाटक भी लिखे हैं।

प्रस्तुत कविता में कवि ने सौन्दर्य को वैयक्तिक रुचि से हटाकर संघर्षशीलता के साथ जोड़ दिया है।

जब भी
भूख से लड़ने
कोई खड़ा हो जाता है
सुन्दर दीखने लगता है।
झपटता बाज,
फन उठाये साँप,
दो पैरों पर खड़ी
काँटों से नन्हीं पत्तियाँ खाती बकरी,
दबे पाँव झाड़ियों में चलता चीता,
डाल पर उल्टा लटक
फल कुतरता तोता,
या इन सबकी जगह
आदमी होता।
जब भी
भूख से लड़ने
कोई खड़ा हो जाता है
सुन्दर दीखने लगता है।

शब्दार्थ

बाज एक शिकारी पक्षी

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

- (1) कवि ने प्राणियों में सौन्दर्य कब देखा है ?
- (2) कवि के अनुसार बकरी में सुन्दरता कब प्रकट होती है।
- (3) कवि ने भूख की दशा को क्यों सुन्दर कहा है ?

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ लिखिए :

जब भी
भूख से लड़ने
कोई खड़ा हो जाता है
सुन्दर दीखने लगता है

प्रवृत्ति

- इस कविता के साथ बच्चन जी की 'बंगाल का अकाल' कविता ढूँढ़कर पढ़िए।

●